पाठ
15

शतरंज में मात

- डॉ.श्री प्रसाद

लोक अनुश्रुतियों और इतिहास के पन्नों में बीरबल, गोनू झा, मुल्ला दो प्याजा, गोपाल भांड आदि अनेक ऐसे व्यक्तित्व का उल्लेख मिलता है जो अपनी बुद्धि चातुर्य और वाक्-पटुता या हाजिर जवाबी के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। उन्हीं में एक प्रसिद्ध चरित्र तेनाली राम का है, जो विजय नगर राज के राजा कृष्णदेव राय के दरबारी थे। इनके जीवन-योगदान के प्रायः दो स्वरूप देखने को मिलते हैं। एक तो न्याय व्यवस्था में, कि गुनाहगार को ही सजा मिले और निर्दोष के साथ न्याय हो सके और दूसरे दरबार में उनसे जलन रखने वाले अथवा उनके खिलाफ षड्यंत्र रचने वाले लोगों का पर्दाफाश किया जा सके जिससे राजा को वास्तविकता का एहसास कराया जा सके। कुछ ऐसा ही दृश्य प्रस्तुत एकांकी पढ़ते हुए हम देख और महसूस कर सकते हैं।

पात्र -

राजा कृष्णदेव राय	तेनालीराम
नाई	दरबारी
सेवक	दर्शकगण

पहला दृश्य

(राजा का दरबार। दरबारी अपने-अपने आसन पर बैठे हैं। राजा और तेनालीराम के आसन अभी खाली हैं।)

पहला दरबारी - देखा, अभी तक नहीं आए तेनालीराम।

दूसरा दरबारी - भला क्यों आएँगे? जब स्वयं महाराज उनकी मुट्ठी में हैं तो वे हम जैसों को क्यों पूछेंगे?

तीसरा दरबारी - महाराज ने भी खूब सिर चढ़ाया है तेनाली को!

चौथा दरबारी - (राजा की नकल करता है) "हाँ तेनाली! वाह तेनाली! क्या पते की बात कही तेनाली ने...।" तेनाली, तेनाली, तेनाली! कान पक गए हैं प्रशंसा सुनते-सुनते।

पहला दरबारी - महाराज के सिर से तेनाली का भूत उतारना होगा।

दूसरा दरबारी - कितनी बार प्रयत्न किया। तेनाली की चतुराई के आगे हमारी एक नही चली!

चौथा दरबारी - कुछ युक्ति निकाली जाए!

पहला दरबारी - (चुटकी बजाते हुए) निकाल लिया मैंने उपाय! सुनो! (सब उसे घेर लेते हैं। आपस में खुसुर-फुसुर होती है। सब खुश नज़र आते हैं। तभी नगाड़े बजने लगते हैं।)

एक सेवक - सावधान! महाराजाधिराज कृष्णदेव राय पधार रहे हैं।
(दरबारीगण अपने-अपने आसन की ओर भागते हैं। चेहरों पर गंभीरता का भाव लाकर राजा का स्वागत करते हैं।)

राजा - (बैठते ही) तेनालीराम कहाँ हैं?

पहला दरबारी - (अन्य दरबारियों को देखते हुए) लो आते ही आ गई याद! (राजा से) अभी नहीं आए। लगता है शतरंज का खेल जमा है कहीं।

एक दरबारी - कहीं शतरंज खेल रहे होंगे।

राजा - शतरंज। तेनालीराम क्या शतरंज के शौकीन हैं?

दूसरा दरबारी - हाँ महाराज, वे तो गजब के खिलाड़ी हैं।

तीसरा दरबारी - पर महाराज की बराबरी नहीं कर सकते।

चौथा दरबारी - महाराज, आज्ञा हो तो मुकाबला आयोजित किया जाए। एक ओर आप, दूसरी ओर तेनालीराम। तेनाली जी नहला, तो आप भी तो दहला हैं।

राजा - (खुश होकर) क्या उत्तम सुझाव है! बराबर का खिलाड़ी मिले, तभी खेल का आनंद आता है। यह तेनाली भी बड़ा दुष्ट निकला। मुझे बताया क्यों नहीं?

पहला दरबारी - वह आपकी हार नहीं देखना चाहता, महाराज! इसलिए छिपाए रखा। पर वास्तव में बड़ा घाघ है तेनाली। एक-से-एक खिलाड़ियों को मात दे चुका है।

राजा - घाघ है तो हम भी कम नहीं। हो जाएँ दो-दो हाथ !

सेवक - श्री तेनालीराम जी आ रहे हैं!

(तेनालीराम का प्रवेश)

तेनाली - (झुककर) प्रणाम! महाराजाधिराज की जय हो!

(राजा मुँह फेरते हैं; तेनाली चैंकता है।)

तेनाली - इस तुच्छ सेवक का प्रणाम स्वीकार करें, महाराज।

राजा - (क्रोधित होकर) तेनाली, तुमने बताया नहीं कि तुम शतरंज में माहिर हो।

तेनाली - (चकित होकर) शतरंज और मैं! शतरंज के विषय में मैं कुछ नहीं जानता महाराज।

राजा - (क्रोधित होने की मुद्रा में)मुझे सब पता है तेनाली! बात अब छिप नहीं सकती।

(दरबारियों से) क्यों?

पहला दरबारी - हाँ, महाराज, बड़े-बड़ों को मात दी है तेनाली ने।

तीसरा दरबारी - ज़रा बच के खेलिएगा, महाराज।

सब दरबारी - (मुँह छिपाकर हँसते हुए) क्या आनंद आ रहा है!

तेनाली - (घबराकर) पर... पर... मुझे वास्तव में शतरंज का ज्ञान नहीं, महाराज...

इस अनाड़ी के संग खेलकर आप पछताएँगे।

राजा - कोई बहाना नहीं चलेगा। (सेवक से) जाओ, व्यवस्था करो।

तेनाली - मैं नहीं खेलता शतरंज! (सिर ठोकता है।)

पहला दरबारी - तेनालीजी, क्यों अस्वीकार करते हैं?

दूसरा दरबारी - जब महाराज ने स्वयं न्यौता दिया है!

तीसरा दरबरी - तेनालीजी, दाँव ज़रा सोचकर चलिएगा!

(सभी हँसकर तेनाली के असमंजस का आनंद लूटते हैं। तेनाली उन्हें

देखता हुआ कुछ सोचता है।)

तेनाली - (दर्शकों से) समझा! चाल चली है सबने। ठीक है! (पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में चैकी, उस पर गद्दी। एक ओर तकिए से टिके राजा। सामने मुँह लटकाए तेनाली। बीच में शतरंज की चादर बिछी है। चारों ओर दरबारी और अन्य लोग बैठे हैं।)

दरबारीगण - (दर्शकों से) अब बरसेगा महाराज का क्रोध तेनाली पर!

राजा - (हुक्का हटाकर) हाँ भई तेनाली, खेल आरंभ हो।

तेनाली - (मुँह लटकाए, धीरे-से) महाराज आरंभ करें।

राजा - यह चला मैं पहली चाल। (मोहरा उठाकर रखते हैं।)

चौथा दरबारी - क्या चाल चली महाराज ने! (ताली बजाता है।)

तेनाली - (सोच में) ऐं ... क्या चलूँ?

दूसरा दरबारी - पर हमारे तेनाली भी कुछ कम नहीं।

तेनाली -	(एक मोहरा उठाते हुए अपने आपसे) चलो, इसे बढ़ाता हूँ।
राजा -	(दर्शकों से) ऐं? सबसे पहले वज़ीर? अवश्य कोई गूढ़ चाल है। सोच-समझ कर चलूँ। (चाल चलते हैं।)
तेनाली -	(दर्शकों से) कुछ भी चलें मुझे क्या? (राजा से) लीजिए, यह चला।
राजा -	(धीरे-से) यह क्या? चतुराई है या मूर्खता?खैर मैंने यह चला।
तेनाली -	अब चला यह घोड़ा।
राजा -	अरे, यह तो सरासर मूर्खता है। अवश्य जानबूझकर हार रहा है। (गरजकर) तेनाली! मन से खेलो!
पहला दरबारी -	ठीक से खेल जमाओ, तभी महाराज को आनंद आएगा।
दूसरा दरबारी -	महाराज को अनाड़ी नहीं, बराबरी का खिलाड़ी चाहिए।
चौथा दरबारी -	आप कुशल खिलाड़ी हैं, जानकर मत हारिए।
तेनाली -	(मन में) अच्छा तमाशा बन रहा है मेरा।
राजा -	(समझाते हुए) ठीक से खेलो! यह मत समझो कि मैं आसानी से हार जाऊँगा।
तेनाली -	मैंने सच कहा था महाराज, मुझे खेल का ज्ञान नहीं है।
राजा -	(क्रोधित होकर) तो क्या ये सब असत्य बोल रहे है?
सब दरबारी -	महाराज, हमने अपनी आँखों से इन्हें बाज़ी-पर-बाज़ी जीतते हुए देखा है।
राजा -	सुना? यदि अब भी हारे तो कठोर-से-कठोर दंड दूँगा। (तेनाली चाल चलता है।)
राजा -	(गरजकर) फिर अनाड़ी चाल! अपना सही रंग दिखाओ, खेल जमाओ!
तेनाली -	जैसी आज्ञा! लीजिए, यह चलता हूँ।
राजा -	उड़ गया न तुम्हारा प्यादा! (क्रोधित होकर) फिर जानकर हारे तुम।
पहला दरबारी -	महाराज अति चतुर हैं। उनका अपमान किया तो ठीक नहीं होगा, तेनाली।
दूसरा दरबारी -	(भड़काते हुए) महाराज का क्रोध भयंकर है, तेनाली।
राजा -	अबकी हारे तो भरी सभा में तुम्हारा सिर मुँड़वा दूँगा। (खेल बढ़ाते हुए) यह रही मेरी चाल।
तेनाली -	(सिर खुजाते हुए) मैंने इससे दिया उत्तर।
राजा -	मारे गए तुम। सँभल जाओ। यह हुई मेरी अगली चाल।
तेनाली -	और यह है मेरा दाँव।
राजा -	फँसाया न? वज़ीर क्यों चले?
तेनाली -	बेगम के बचाव के लिए वज़ीर बढ़ाया।
राजा -	और यह कटा तुम्हारा वज़ीर।

तेनाली - अब आए स्वयं राजा।

राजा - गया तुम्हारा राजा। फिर पिट गए।इतनी मूर्खता? मुझे विश्वास नहीं रहा तुम पर तेनाली। (उठ खड़े होते हैं, शतरंज उलट देते हैं, मोहरे उठाकर ज़ोरों से फेंकते हैं।) अच्छा खेल बनाया हमारा। (दरबारियों से) कल दरबार में नाई बुलाना। तेनाली के बाल उतरवाऊँगा; अपमान का बदला लूँगा। (तमतमाया चेहरा लिए पाँव पटकते चल देते हैं।)

पहला दरबारी - (खुशी-खुशी) बन गई न बात।

तेनाली - (मुँह छिपाए) भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान?

(पर्दा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में ऊँचा मंच। राजा सिंहासन पर। तेनाली अपने आसन पर। एक सेवक नाई को खींचता हुआ लाता है।)

नाई - (राजा के सामने गिरकर) मैंने कुछ नही किया, महाराज! मैं निर्दोष हूँ।

राजा - उठो, उठो। तुम्हें कोई सज़ा नहीं मिल रही है।

नाई - (खुश होकर) नहीं? फिर...?

राजा - अपना उस्तरा निकालो। मुंडन करना है।

नाई - मुंडन! तब तो इनाम भी अच्छा मिलेगा। फिर मुझे क्या? राज-दरबार में केश उतारूँ या नदी किनारे, सब बराबर। (पेटी खोल तैयारी करता है। तमाशा देखने के उत्सुक दरबारी धीरे-धीरे मंच के निकट आते हैं।)

तेनाली - क्षमा करें, महाराज।

राजा - क्षमा-वमा कुछ नहीं। यह तुम्हें पहले सोचना था, जब मेरा अपमान किया। मंच पर चढ़ो। (तेनाली हॉल के बीच मंच पर चढ़ता है।)

नाई - अरे, इतने महान आदमी का मुंडन!

राजा - डरो मत, नाई! तुम आज्ञा का पालन करो।

नाई - जो आज्ञा, महाराज! (उस्तरा लेकर तेनाली के पास जाता है।)

तेनाली - महाराज, आज्ञा दें तो एक निवेदन करूँ।

दरबारीगण - (आपस में) अवश्य कोई नई चाल है।

राजा - कहो तेनाली!

तेनाली - महाराज! इन बालों पर मैंने पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ उधार ली हैं। जब तक कर्ज़ा न चुका दूँ, केश कटवाने का कोई हक नहीं मुझे।

सब दरबारी- देखी तेनाली की धूर्तता।

राजा- शांत! दंड तो भुगतना पड़ेगा इनको। (सोचकर, एक दरबारी से) जाओ,

अभी कोष से पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ निकलवाकर इनके घर भिजवाओ।
(नाई से) काम पूरा करो। देखना, एक बाल भी न छूटे।

(दरबारी खुश। नाई फिर उस्तरा उठाता है।)

तेनाली - (रोककर) क्षण भर सधो भैया! (आसन लगाकर मंच पर बैठ जाता है। आँखें मूँद, हाथ जोड़ मंत्रों का उच्चारण करता है।) ओऽम् नमः शिवाय, ओऽम् नमः...

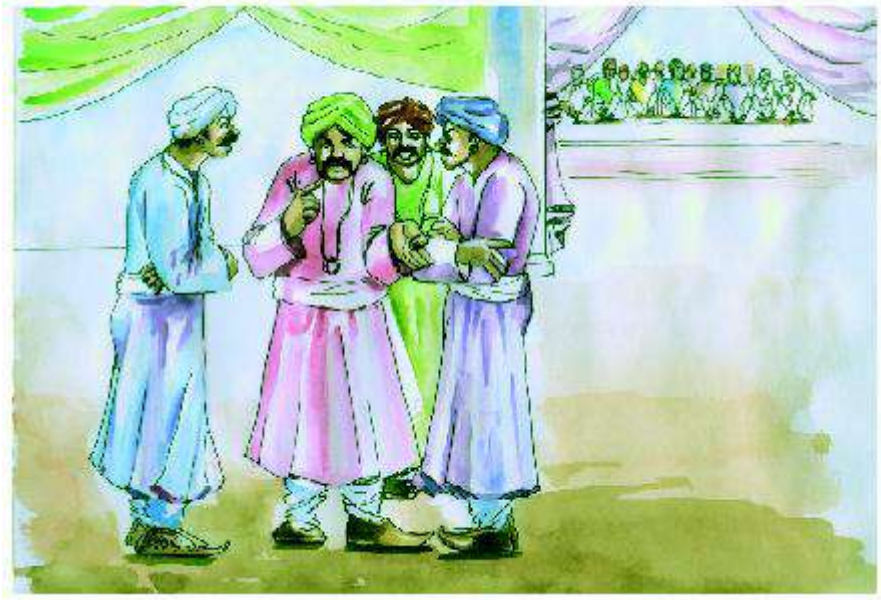

राजा - (बीच में) तेनाली, यह क्या?

दरबारी - (आपस में) एक नया ढोंग। हद है चतुराई की!

तेनाली - (आँखें खोलकर शांति से समझाते हुए) कृपया, बीच में न टोकें। मैं आपकी भलाई के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।

राजा - पहेली मत बुझाओ। नाई, देरी क्यों? उस्तरा उठाओ।

तेनाली - मेरी बात सुनने का कष्ट करें, महाराज!

दरबारी - (अधीर होकर) महाराज, मत सुनिए। नाई, अपना काम करो।

(नाई फिर उस्तरा उठाता है। राजा रोकता है।)

तेनाली - हमारे यहाँ माता-पिता के स्वर्ग सिधारने पर ही मुंडन होता है।

राजा - तुम्हारे माता-पिता स्वर्ग सिधार चुके हैं, फिर क्या आपत्ति?

तेनाली - महाराज, अब आप ही मेरे माता-पिता हैं। आप सामने विराजमान हैं। फिर मुंडन कैसे कराऊँ? इधर मेरा मुंडन हो, उधर आप स्वर्ग सिधारें, तो?

राजा - (घबराकर) अरे, यह कैसे हो सकता है?

तेनाली - आपके स्वर्ग सिधारने से पहले मैं मुंडन कराऊँ तो ज़रूर आप पर विपत्ति आएगी। इसलिए प्रभु को याद कर रहा हूँ।

राजा - (सोचते हुए) मुंडन से पहले सच में मृत्यु आ गई तो? नहीं, नहीं! रोक दो हाथ, नाई! तेनाली, दंड वापिस लिया मैंने!

तेनाली - महाराज! आप दीर्घायु हों, आप महान्् हैं।

राजा - (मुस्कराते हुए) और तुम कुछ कम नहीं। तुमसे कौन जीत सकता है? अशर्फियाँ भी लीं, दंड-अपमान से भी बचे। पर मैं तुम्हारी चतुराई से एक बार फिर खुश हो गया। चलो, बाग में चलें। (सिंहासन से उतरकर तेनाली को साथ लिए बाहर निकल जाते हैं।)

पहला दरबारी - (सिर ठोकते हुए) फिर छूट गया तेनाली।

दूसरा दरबारी - (लड़खड़ाकर गिरते हुए) पाँच हज़ार अशर्फियाँ भी मार लीं।

तीसरा दरबारी - (बाल नोचते हुए) हम फिर हार गए।

सब दरबारी - हाय तेनाली! तुम्हारी बुद्धि ने हमें फिर मात दी।

(पर्दा गिरता है।)

अभ्यास

पाठ से

1. "भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान!" ये शब्द किसने, किससे और क्यों कहे?
2. मुंडन किसका और क्यों हो रहा था?
3. तेनालीराम ने अपनी किस चतुराई से दंड से मुक्ति पाई और पाँच हजार अशर्फियाँ ले लीं?
4. दरबारी तेनालीराम से क्यो चिढ़ते थे, कारणों को लिखिए।

6PMB6R

भाषा से

1. 'सिर चढ़ना' - प्रस्तुत एकांकी में आपने यह मुहावरा पढ़ा। ऐसे ही सिर पर लिखे गए चार और मुहावरे लिखिए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. नीचे कुछ संज्ञाएँ दी गई हैं। आपको इनसे विशेषण बनाने हैं।

   शिक्षा, अपमान, दोष, ढोंग, क्रोध, ज्ञान।

3. विलोमार्थी शब्दों की जोड़ी बनाइए।

प्रशंसा	अव्यवस्था
चतुराई	सज्जन
खुश	पराजय
दुष्ट	निंदा
उत्तम	नाखुश
जय	मूर्खता
व्यवस्था	अधम

6PH78E

योग्यता विस्तार

1. तेनालीराम की चतुराई की कई प्रसिद्ध कथाएँ हैं। ऐसी ही कोई एक-एक कथा कक्षा में अलग-अलग विद्यार्थी सुनाए।

2. शतरंज का जन्म भारत में हुआ था। ऐसे और खेलों का पता लगाइए जिनकी जन्मभूमि भारत है।

3. सोचिए कि यदि आप तेनालीराम की जगह होते/होतीं तो क्या करते/करतीं ?

4. इस एकांकी को कहानी के रूप में कक्षा में सुनाइए।

5. इस एकांकी को अभिनय द्वारा बालसभा में प्रस्तुत कीजिए।

6Q63A2

6. शतरंज का खेल बुद्धि का खेल है। शतरंज की बिसात का चित्र देखिए और समझिए। इसमें प्रत्येक मोहरा निश्चित स्थान पर रखा जाता है,फिर खेल प्रारंभ होता है। प्रत्येक मोहरे की चाल निर्धारित रहती है। इनकी चालों के बारे में जानकारी लीजिए ।

शतरंज की बिसात

काले मोहरे

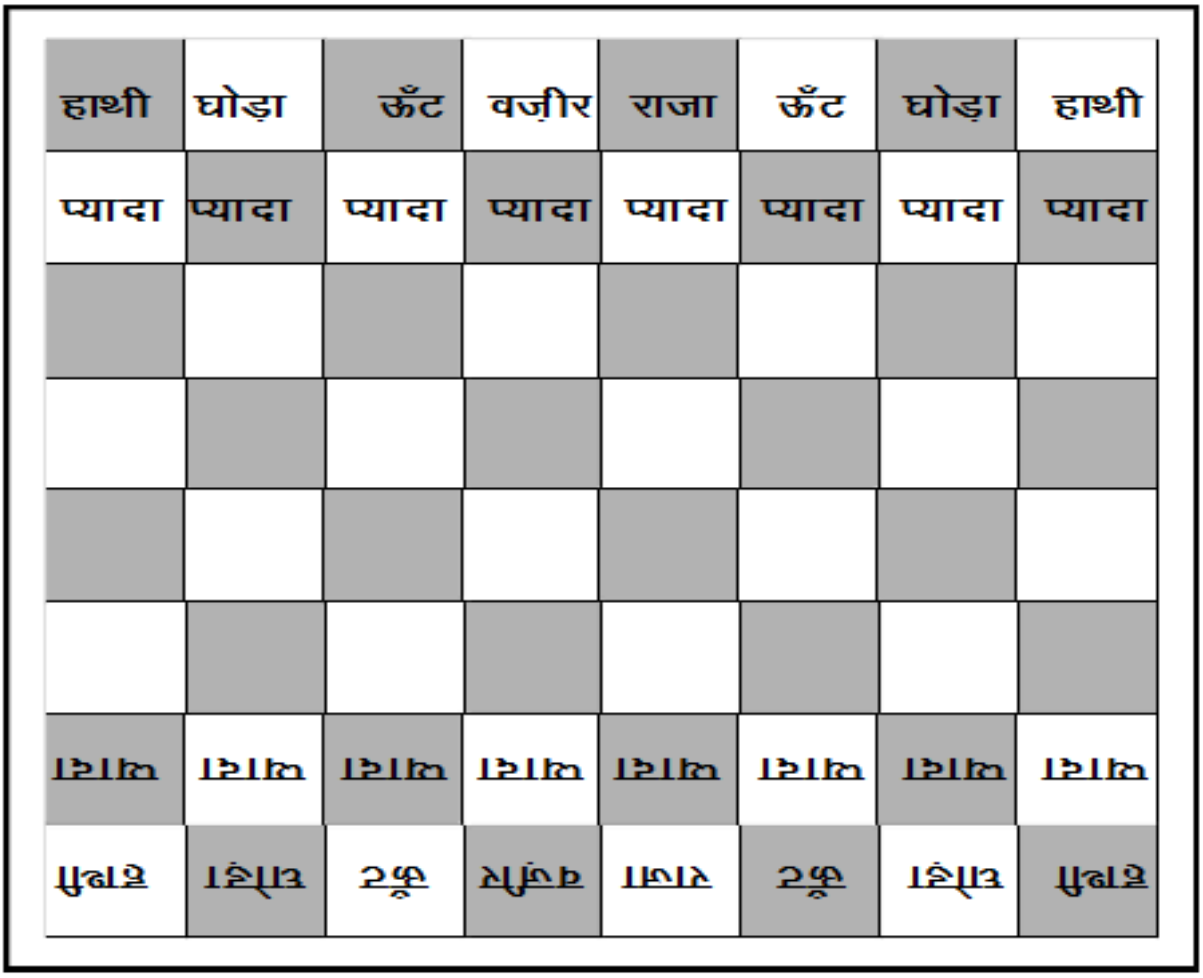

सफेद मोहरे